पुनर्जागरण समिति के विद्यार्थी से अकाउंटेंट तक का सफर

मेरा नाम आदित्य है, मैं आर.के. पुरम, दिल्ली में रहता हूँ। मेरी पढ़ाई की शुरुआत पुनर्जागरण समिति बाल संस्कार केंद्र, आर.के. पुरम से हुई। यहाँ मुझे पढ़ाई के साथ-साथ नई चीजें सीखने और अपना आत्मविश्वास विकसित करने का अवसर मिला। मैं पढ़ाई में कमजोर था, लेकिन पढ़ाई में मेरी बहुत रुचि थी। इसी कारण हमारे शिक्षक हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाते रहते थे और कहते थे कि तुम मन लगाकर पढ़ाई करो, जीवन में तुम्हें कुछ अच्छा जरूर मिलेगा।

समय के साथ मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और पढ़ते-पढ़ते मैंने 10वीं और 12वीं कक्षा पूरी की। इसके बाद मैंने आगे की पढ़ाई के लिए कॉलेज में दाखिला लिया। लेकिन आर्थिक कठिनाइयों के कारण मुझे काम करने की आवश्यकता महसूस हुई। इसी दौरान मुझे पता चला कि जहाँ से मैंने अपनी पढ़ाई शुरू की थी, उसी केंद्र में बच्चों को पढ़ाने के लिए एक जगह खाली है। मेरे लिए इससे अच्छा अवसर और क्या हो सकता था कि जिस केंद्र से मैंने शिक्षा प्राप्त की, उसी केंद्र में मुझे बच्चों को पढ़ाने का अवसर मिला।

बच्चों को पढ़ाने के इस अनुभव ने मेरे अंदर जिम्मेदारी, आत्मविश्वास और नेतृत्व करने की क्षमता को और मजबूत किया। इसी क्रम में मैंने अपना Graduation भी पूरा किया।

पुनर्जागरण समिति से मिली शिक्षा, मार्गदर्शन और अवसरों ने मेरे जीवन को एक नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस केंद्र ने मुझे अपने सपनों को पूरा करने और अपने पैरों पर खड़े होने का आत्मविश्वास दिया।

आज मुझे गर्व है कि मैं एक निजी कंपनी में अकाउंटेंट के पद पर कार्यरत हूँ। मैं पुनर्जागरण समिति और वहाँ से जुड़े सभी शिक्षकों एवं सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मेरी जीवन-यात्रा में मेरा मार्गदर्शन और सहयोग किया।